

“जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय न्याय : भारत में भौगोलिक एवं सामाजिक असमानता का अध्ययन”

शशि भूषण राम त्रिपाठी

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.341>

शोध-सार

पर्यावरण समस्या 21वीं शताब्दी की सबसे गम्भीर चुनौतियों में से एक है, जो वैश्विक जगत को चिन्तन हेतु मजबूर कर दिया है। जलवायु परिवर्तन तापमान में वृद्धि, वर्षा के स्वरूप में परिवर्तन, शुद्ध जल संकट, प्राकृतिक आपदा आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में परिवर्तन ने जनमानस को प्रभावित किया है। जलवायु के परिवर्तन को हम धरती के दीर्घकालिक मौसम और तापमान की दशा में आने वाले बड़े परिवर्तन के रूप में देखते हैं। वर्तमान परिवर्तन में ग्लोबल वार्मिंग के साथ-साथ हमारे द्वारा किये जाने वाले भौतिक संसाधनों के उपयोग के कारण धरती के तापमान में तीव्र गति से हो रही वृद्धि के परिणाम स्वरूप पर्यावरण में भी बदलाव देखा जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि मात्र प्रकृति के विनाश को बचाना ही नहीं बल्कि पर्यावरण को मानवाधिकार एवं सामाजिक न्याय का प्रबर्धन भी किया जाना चाहिए।

शब्द संकेत — पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय न्याय, प्राकृतिक असंतुलन, ग्रीन हाउस, प्रदूषण, परिस्थितिकीय, ग्लोबल वार्मिंग।

भूमिका—

मानव समाज एवं प्रकृति का अटूट सम्बन्ध रहा है। मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हमेशा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर किया है। समय परिवर्तन और विकास की आवश्यकता ने कहीं न कहीं प्राकृतिक संतुलन को असंतुलित भी किया है। कृषि उद्योग नगरीकरण में वृद्धि, तीव्र परिवहन के विकास के कारण भी पर्यावरण को क्षति पहुंचाई है। औद्योगीकरण तकनीकी विकास ने जहाँ मानव जीवन को सुलभ बनाया वहीं प्राकृतिक संसाधनों के अधिक दोहन के कारण कारण पर्यावरण को भारी क्षति भी पहुंचाई है।

वर्तमान परिवेश में पर्यावरण में आये परिवर्तन को मात्र तापमान वृद्धि तक सीमित नहीं किया जा सकता है। बल्कि इसमें जलवायु परिवर्तन, असीमित मानसून, सूखा, अनियंत्रित बाढ़, चक्रवात भूस्खलन, हिमनादों का पिघवाल, समुद्र के जल स्तर में वृद्धि, जै-विविधता की क्षति, तल, वायु, ध्वनि प्रदूषण के द्वारा भूमि अवनयन की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वास्तव में इन परिवर्तनों के कारण होने वाले क्षति को भी देखा जा सकता है। जैसे-समुद्र के निकट स्थित तटीय परिक्षेत्र में जल स्तर वृद्धि और चक्रवात का खतरा, शुष्क क्षेत्रों में सूख, जलस्तर में कमी हिमालीय क्षेत्र में भूस्खलन, हिमनदों में परिवर्तन बाढ़ जैसी चुनौती का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण महानगरों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण जैसी समस्याएँ आती रहती हैं।

पर्यावरणीय परिवर्तन का मूल प्राकृतिक एवं मानवीय क्रियाओं के फलस्वरूप पर्यावरण के भौतिक, जैविक और सामाजिक घटकों में होने वाले परिवर्तन के प्रभाव में देखा जा सकता है। भूकम्प,

- क्षेत्रीय समन्वयक, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केन्द्र अयोध्या।

ज्वालामुखी, विस्फोट, प्राकृतिक जलवायु चक्र नदी की धारा में परिवर्तन प्राकृतिक पर्यावरणीय परिवर्तन कह सकते हैं। वनों की कटाई, औद्योगिक प्रदूषण जीवाश्म ईंधन का प्रयोग, अनियंत्रित अनियोजित नगरीकरण, खनन तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को भी पर्यावरण परिवर्तन का कारक कहा जा सकता है।

वर्तमान परिवेश में पर्यावरणीय संकट को मनुष्य की गति विधियों के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् ऊर्जा की बढ़ती खपत और जीवाश्म ईंधनों के व्यापक उपयोग ने वायुमण्डल में ग्रीन हाउस गैसों की सांद्रता में भी वृद्धि हुई है। यही कारण है जिसमें तापमान में वृद्धि और जलवायु में तीव्र गति से परिवर्तन देखा जा सकता है।

भौगोलिक असमानता विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों, आर्थिक अवसरों, आधारभूत सुविधाओं, पर्यावरणीय जोखिमों तथा विकास की क्षमता में विद्यमान अन्तर से है। जिसे विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है। देश, राज्य, ग्रामीण नगरीय तटीय, आन्तरिक, पर्वतीय, मैदानी, विकसित, अविकसित तथा एक ही शहर के समृद्ध और वंचित क्षेत्रों के बीच, प्राकृतिक आपदा अथवा पर्यावरणीय संकट से होने वाली क्षति केवल खतरे की तीव्रता पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि सामाजिक-आर्थिक क्षमता और अनुकूलन क्षमता भी यह निर्धारित करती है कि कोई समुदाय संकट का सामना कितनी प्रभावशीलता के साथ करता है।

पर्यावरणीय परिवर्तन तथा भौगोलिक असमानता के बीच दोहरी सम्बन्ध है जहाँ पर्यावरणीय परिवर्तन से क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि होती है वहीं आर्थिक एवं सामाजिक असमानता पर्यावरण संकट भी उत्पन्न करता है। जैसे निम्न आर्थिक स्थिति वाले लोग प्रायः ऐसे क्षेत्र में निवास करते हैं जहाँ भूमि सस्ती हो, लेकिन ऐसे परिक्षेत्र में बाढ़, प्रदूषण, जल-जमाव जैसी समस्या हमेशा बनी रहेगी। वहीं उच्च आर्थिक प्रस्थिति वाले लोग हमेशा बेहतर आवासीय परिप्रेक्ष्य का चुनाव करते हैं, जहाँ स्वास्थ्य सुविधा, बेहतर परिवहन, स्वच्छ जल, स्वस्थ पर्यावरण इत्यादि।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में की भौगोलिक विशेषताओं के अनुसार अलग-अलग होता है, जलवायु परिवर्तन के प्रति हिमालय का क्षेत्र हमेशा संवेदनशील होता है। तापमान परिवर्तन हिमनदों में बदलाव, अधिक वर्षा, तथा भूस्खलन जैसे घटनाएँ पर्वतीय समुदायों की आजीविका तथा आधारभूत संरचना को प्रभावित करती हैं। पर्वतीय क्षेत्र में सड़क, जल विद्युत परियोजनाओं के विस्तार के साथ पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए। गंगा परिक्षेत्र की बड़ी जनसंख्या कृषि, जल संशोधन और नदी आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर रहती है। बाढ़, जल-अभाव, भूजल, दोहन तथा अनियमित वर्षा का कृषि एवं ग्रामीण जनजीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या की दृष्टि से अत्यधिक घना परिक्षेत्र होने के कारण पर्यावरणीय न्याय सामाजिक प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील है।

तीव्र गति से शहरों की जनसंख्या में हो रही वृद्धि कहीं न कहीं पर्यावरणीय असमानता को बढ़ावा देती है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण औद्योगिक अपशिष्ट एवं जल जमाव की समस्या में भी तीव्रगति से वृद्धि हो रही है। नगरों में पर्यावरण असंतुलन व्यापक रूप से देखा जा सकता है। नियोजित और सुविधा-सम्पन्न आवासीय क्षेत्र की तुलना में अनियोजित बस्तियाँ अधिक पर्यावरणीय समस्या से प्रभावित हैं। नगरीकरण कहीं न कहीं पर्यावरणीय संकट में वृद्धि का प्रमुख कारक भी है।

महानगरों में अधिक भूमि निर्माण, कृषि क्षेत्रों की कमी, अत्याधिक परिवहन, प्राकृतिक जल निकासी में अवरोध पर्यावरण समस्या का कारक है। नगरीय पर्यावरण असमानता का एक महत्वपूर्ण स्वरूप गन्दी बस्तियाँ जो प्रायः रेलवेलाइन के किनारे, नालों, औद्योगिक क्षेत्रों तथा जोखित ग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पायी जाती है। नगरीय विकास योजना को मात्र आर्थिक विकास नहीं बल्कि पर्यावरणीय सुरक्षा और सामाजिक समावेशन की प्राथमिकता देना आवश्यक है।

पर्यावरणीय परिवर्तन और भौगोलिक असमानता के साथ-साथ पर्यावरणीय न्याय हेतु सतत विकास आवश्यक है। सतत विकास का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता को पूरा करते हुए भविष्य के लिए भी समझौता न करना है। अतः यह आवश्यक है कि सरकारों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के साथ पर्यावरण संरक्षण हेतु कुछ पक्षों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। जैसे-प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, नवीन ऊर्जा विस्तार, जल संरक्षण हेतु विशेष अभियान, जल के शुद्धिकरण का प्रयास, वन एवं जैव-विविधता संरचना स्थानीय समुदायों की भागीदारी, गरीब, कमजोर समूहों के लिए सामाजिक सुरक्षा इत्यादि,।

पर्यावरणीय न्याय का आशय पर्यावरणीय संसाधनों, पर्यावरणीय लाभों तथा प्रदूषण और पर्यावरणीय हानियों का समाज के सभी वर्गों में न्यायपूर्ण एवं समान वितरण समुनिचित किया जाना चाहिए। वास्तव में पर्यावरणीय क्षति का भार, प्राकृतिक संसाधनों से मिलने वाले लाभ को विभिन्न तत्वों यथा-समानता, संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण पर्यावरणीय जोखिम में समानता, निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी अन्तर-पीढ़ीगत न्याय, कमजोर वर्गों की सुरक्षा इत्यादि। वास्तव में औद्योगिक परियोजनाओं से होने वाला प्रदूषण गरीब ग्रामीण जन-जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करता है। जबकि विभिन्न परियोजनाओं का लाभ अन्य वर्गों को प्राप्त होता है। इसे हम पर्यावरणीय अन्याय कह सकते हैं। जबकि प्रदूषण को कम करने हेतु औद्योगिक संस्थानों में आवश्यक रूप से बेस्ट वाटर मैनेजमेन्ट हेतु युनिट लगाया जाना चाहिए। प्रभावित लोगों की उचित पुनर्वास इत्यादि को हम पर्यावरणीय न्याय कह सकते हैं। पर्यावरणीय न्याय मात्र स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संसाधनों, जोखिम, निर्णय लेने की शक्ति और विकास के लाभों को न्यायपूर्ण वितरण के रूप में देखा जा सकता है।

वैश्विक सन्दर्भ में पर्यावरणीय परिवर्तन को अब मात्र वैज्ञानिक या पारिस्थितिकीय समस्या के रूप में नहीं देखा जाता है। बल्कि इसे अर्थव्यवस्था स्वास्थ्य रोजगार, खाद्य-सुरक्षा, प्रवास, सामाजिक न्याय इत्यादि के रूप में देखा जाता है। जलवायु परिवर्तन के सन्दर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि जिन क्षेत्रों में एवं समुदायों का वैश्विक उत्सर्जन में योगदान कम है, वह जलवायु जोखिमों से अधिक प्रभावित होता है। इसे हम जलवायु न्याय हेतु काम करने की प्रेरणा देता है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए अलग चुनौतियाँ हैं। यहाँ आर्थिक विकास एवं गरीबी उन्मूलन के लिए कार्य किया जाना आवश्यक है। दूसरी ओर पर्यावरणीय स्थिरता भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। विकास एवं पर्यावरण को अब संतुलित दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय न्याय को हम मानते हैं कि वह जलवायु संकट का कारण और उसका प्रभाव समानरूप से वितरित नहीं है। जहाँ कार्बन उत्सर्जन अपेक्षाकृत कम है, वहाँ जलवायु परिवर्तन के गम्भीर प्रभावों को सामना किया जा सकता है। जैसे-छोटे किसान जलवायु प्रेरित सूखे और अनियमित वर्षा से प्रभावित हो सकते हैं। जबकि निम्न आय वाले नगरीय समुदाय अत्यधिक

गर्मी, बाढ़ और प्रदूषण के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। वहीं अधिक संसाधन-सम्पन्न वर्ग अनुकूलन के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ, बीमा और तकनीकी साधन प्राप्त कर सकते हैं। औद्योगिक परियोजनाएँ आर्थिक विकास में वृद्धि का द्योतक है। लेकिन इनके कारण कुछ स्थानीय समुदायों को विस्थापन, आजीविका की क्षति, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच में कमी का सामना भी करना पड़ता है। जलवायु न्याय का उद्देश्य ऐसी नीतियों में वृद्धि है जिसमें विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता के बीच संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए। इसलिए समानता, सहभागिता, संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण, स्थानीय समुदायों के अधिकार एवं उनके हितों की रक्षा इत्यादि महत्वपूर्ण पक्ष हैं। अतः पर्यावरणीय परिवर्तन केवल प्रकृति में परिवर्तन नहीं बल्कि समाज और स्थान के बीच भी परिवर्तन है। इसलिए इसका समाधान प्रकृति, समाज के साथ आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण के बिना सम्भव नहीं है।

संदर्भ सूची –

1. कुमार, राम; पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन, भारतीय साहित्य-2023
2. हुसैन, मजीद ; पर्यावरण एवं परिस्थितिकीय, जी0के0 पब्लिकेशन-2026.
3. मैथ्यूज, जॉन; ए इन साइक्लोपीडिया ऑफ इनवायरमेण्टल चेंज, सेजपब्लिकेशन 2014
4. विलियम ई0 स्टर्लिंग; क्लाइमेट चेंज, इम्पैक्ट, एडाप्टेशन एण्ड बूलनरे विलिटी-2022
5. पचौरी, आर0के0 एवं मायर एल0ए0, क्लाइमेट चेंज-2014
6. युनाइटेड नेशन्स इनवायरमेण्ट प्रोग्राम ;ऋच्छ इमीसन्स गैप रिपोर्ट।
7. वर्ल्ड बैंक क्लाइमेट चेंज एण्ड डवलपमेन्ट रिपोर्ट।